श्रद्धेय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के मुखारविन्द से......
परागपुर (हिमाचल प्रदेश) १० सितम्बर, २००२ प्रातः ११-३० बजे

एक गहस्थ महात्मा ने, अपना अन्तिम समय आया जानकर, अपने पुत्रों को उपदेश देने के लिए एक पुत्र को कहा कि वह एक मुट्ठी में चन्दन का पाउडर और दूसरी मुटठी में बुझे हुए चूल्हे का कोयला पकडे। कुछ देर बाद दोनों को फैंकने को कहा। जिस हाथ में चन्दन था, फैंकने के बाद भी, उस हाथ से, चन्दन की सुगन्ध आ रही थी और कोयले वाला हाथ काला हो गया था। महात्मा ने कहा 'संगति करनी हो तो ऐसे कि, जैसे कि चन्दन और कुसंगती त्यजनीय है। कोयले जैसे की कुसंगती कभी ना करना जो हाथ मुँह काला कर देता है।'

फिर महात्मा ने अपने शिष्यों को समबोधित करके कहा :
दो चीजें सदा याद रखने की हैं, एक परमात्मा एवं दूसरी मृत्यु, जो हमें परमात्मा की याद दिलाती रहती है।
और दो बातें कभी याद नहीं रखनी। एक, किसी का भला किया तो उसको याद नहीं रखना, नेकी कर और कूँए में डाल। दूसरा यदि किसी ने आपका बुरा किया तो उसे भी याद नहीं रखना।

'ऐसा घर, ऐसा साधक, ऐसा समाज शान्त हो जाएगा, शान्त बन जाएगा, बैकुण्ठ बन जाएगा, जो इन चार बातों को, अपने जीवन में उतारेगा।'